अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : जैनागम स्तोक वारिधि – सातवीं कक्षा (10 जनवरी, 2016)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र. 1 निम्नलिखित में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए– 10X1=10

(a) जिन बोलों में 1 से 14 तक सभी गुणस्थान मिलते हैं, उनमें कहना चाहिए।

क. 8 कर्मों की भजना ख. 8 कर्मों की नियमा

ग. 7 की नियमा 1 की भजना घ. 8 का अबंध ( )

(b) मति ज्ञान में कर्मों की नियमा भजना है–

क. 8 कर्मों की भजना ख. 7 की भजना वेदनीय की नियमा

ग. 7 की भजना आयु का अबंध घ. 7 की नियमा आयु की भजना ( )

(c) 256 राशि का थोकड़ा पन्नवणा सूत्र के पद में चलता है–

क. पहले ख. दूसरे

ग. तीसरे घ. चौथे ( )

(d) जागृत से पर्याप्त में अल्पबहुत्व है–

क. संख्यात गुणा ख. असंख्यात गुणा

ग. अनन्त गुणा घ. विशेषाधिक ( )

(e) नो संज्ञा बहुता जीव में गुणस्थान पाये जाते हैं–

क. 7 से 14 तक ख. 6 से 12 तक

ग. 1 से 11 तक घ. 4 से 14 तक ( )

(f) 47 बोल में कषाय मार्गणा के बोल हैं–

क. 4 ख. 6

ग. 7 घ. 5 ( )

(g) असंख्यात भाग हीन और असंख्यात भाग अधिक कहलाता है–

क. एकस्थानपतित ख. द्विस्थान पतित

ग. त्रिस्थानपतित घ. चतुस्थानपतित ( )

(h) एक पृथ्वीकाय, दूसरे पृथ्वीकाय से अवगाहना की अपेक्षा है–

क. एकस्थानपतित ख. द्विस्थान पतित

ग. त्रिस्थानपतित घ. चतुस्थानपतित ( )

(i) जिसमें वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शादि हों, उन पदार्थों को कहते हैं–

क. धर्मास्तिकाय ख. द्रव्य

ग. पर्याय घ. रूपी ( )

(j) एक परमाणु दुद्गल, दूसरे परमाणु पुद्गल से अवगाहना की अपेक्षा है–

क. चतुस्थानपतित ख. द्विस्थानपतित

ग. तुल्य घ. एक प्रदेशहीन अधिक ( )

प्र. 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हाँ/नहीं में दीजिए– 10X1=10

(a) नवें गुणस्थान के प्रथम दो भाग में सवेदी तथा शेष तीन भागों में अवेदी होता है। .....

(b) शुक्ल लेशी जीव अभवी हो सकता है। .....

(c) स्थिति जीवन पर्यन्त की होती है, जबकि अवगाहना वर्तमान समय की होती है। .....

(d) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जघन्य अवगाहना युगलिकों की ही होती है। .....

(e) प्रदेश व परमाणु दोनों ही सूक्ष्म एवं अविभाज्य है। .....

(f) असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध में असंख्यात परमाणु मिले होते हैं, उनमें असंख्यात गुणी तक हानि–वृद्धि हो सकती है। .....

(g) इन्द्रिय उपयोग वालों की 32 राशि, नौ इन्द्रिय उपयोग वालों की 224 राशि होती है। .....

(h) आयु कर्म का बन्धकाल लगभग 6 आवलिका के आस–पास का संभव है। .....

(i) जिन बोलों में 1 से 14 गुणस्थान होते हैं, उनमें 50 बोल की बंधी के अनुसार 8 कर्मों की भजना कहना चाहिए। .....

(j) 50 बोलों में से पाँचवें देवलोक में 33 बोल पाये जाते हैं। .....

प्र. 3 निम्नलिखित में जोड़ी मिलान कर सही उत्तर लिखिए– 10X1=10

(a)	कृष्ण लेशी नारकी	(क) दूसरा, तीसरा, चौथा, भंग	.....
(b)	मिश्र दृष्टि वाणव्यन्तर	(ख) चारों भंग	.....
(c)	शुक्ल लेशी सर्वार्थ सिद्ध	(ग) तीसरा, चौथा भंग	.....
(d)	तेजो लेशी वनस्पति काय	(घ) पहला, तीसरा, चौथा भंग	.....
(e)	नपुंसक वेदी पृथ्वीकाय	(च) 8 कर्मों की भजना	.....
(f)	अवधिज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(छ) 7 कर्मों की भजना, आयु का अंबध	.....
(g)	केवल ज्ञानी मनुष्य	(ज) पहला, तीसरा भंग	.....

(h) नो भव्य नो अभव्य (झ) तीसरा भंग .....

(i) अभाषक (य) 8 कर्मों का अबंध .....

(j) अनाहारक (र) चौथा भंग .....

प्र. 4 मुझ पहचानो– 10X2=20

(a) मुझमें 1 से 13 गुणस्थान होते हैं तथा 7 कर्मों की भजना व वेदनीय की नियमा होती है। .....

(b) मैं जीवन में एक बार ही बंधता हूँ, वह भी वर्तमान भव के दो भाग बीतने पर। .....

(c) मेरी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट देशोन क्रोड पूर्व होती है। .....

(d) सामान्य मनुष्य–तिर्यंच में जघन्य स्थिति में मेरा उपयोग नहीं माना जाता। .....

(e) जीव पर्याय थोकड़े में उत्पत्ति के प्रथम समय में शक्ति की अपेक्षा मुझे माना गया है। .....

(f) मैं एक आकाश प्रदेश पर ही ठहरता हूँ। .....

(g) मुझे बनने व बिखरने में केवली समुद्घात के समान आठ समय लगते हैं। .....

(h) मैं जघन्य प्रदेशी स्कन्ध हूँ। .....

(i) मैं दुर्लभ बोधि हूँ। .....

(j) मुझमें अलेशी, अवेदी अवस्था 9 साल से पूर्व संभव नहीं है। .....

प्र. 5 एक–दो पंक्ति में उत्तर दीजिए– 9X2=18

(a) तीन विकलेन्द्रिय जीव समकित में आयुष्य क्यों नहीं बांधते हैं?

.....

.....

.....

(b) अवधिज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में दूसरा भंग नहीं पाये जाने का क्या कारण है?

.....

.....

.....

(c) केवलज्ञानी मनुष्य की केवलज्ञानी मनुष्य से तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

(d) जघन्य स्थिति वाले बेइन्द्रिय की जघन्य स्थिति वाले बेइन्द्रिय से तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

(e) मध्यम अवगाहना वाले पृथ्वीकाय की आपस में तुलना करने पर अवगाहना चतु:स्थान पतित होने का कारण लिखिए।

.....

.....

.....

(f) उत्कृष्ट अवगाहना वाले असुर कुमार देवों की आपस में तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

(g) अजीव पर्याय की अपेक्षा चतु: स्थान पतित को समझाइए।

.....

.....

.....

(h) एक प्रदेशावगाढ़ पुद्गल की एक प्रदेशावगाढ़ पुद्गल से तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

(i) 50 बोल की बंधी से संज्ञी और असंज्ञी में कर्मों की नियमा–भजना लिखिए।

.....

.....

.....

प्र. 6 तीन–चार पंक्ति में उत्तर दीजिए– (कोई आठ) 8X4=32

(a) वेदनीय कर्म आश्री समुच्चय जीव में पाये जाने वाले भंग लिखिए तथा सलेशी, शुक्ल लेशी में चौथा भंग कैसे घटित होगा?

.....

.....

.....

.....

.....

(b) चार अनुत्तर विमान के 26 बोलों में चारों भंग किस अपेक्षा से घटित होंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

(c) जघन्य, उत्कृष्ट, मध्यम चक्षु दर्शन वाले नारकियों की आपस में तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) जघन्य, उत्कृष्ट, मध्यम अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रियों की आपस में तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) मनःपर्यवज्ञानी संयमी मनुष्य के मारणांतिक समुद्घात नहीं करने का कारण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(f) एक द्विप्रदेशी स्कन्ध, दूसरे द्विप्रदेशी स्कन्ध से तुलना को स्पष्ट करते हुए समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

(g) जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट अवगाहना वाले असंख्यात प्रदेशी स्कन्धों की आपस में तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(h) अजीव पर्याय थोकड़े का समुच्चय क्षेत्र द्वार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) सुप्त जीवों से जागृत जीव संख्यात गुणा है, कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....